ISSN : 3048-6203 Volume -2| Issue -2| July - Dec 2025

शोध भूमि
शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका
Page No. : 605-609

# अंगारे जब फुल बन जाते हैं, झारखण्ड की मण्डा पुजा

**डॉ0 चिन्तामणि सांगा**

सहायक अध्यापिका,

उत्क्रमित, +2 विद्यालय, बेड़ो, रांची, झारखण्ड।

**सारांश**

झारखण्ड पौराणिक भूभाग है। यहाँ नाम असुर सराक आदि के मध्य मुण्डा सर्वप्रथम आ बसे असुर तब लोहा गलाने और लोहे का औजार बनाने के लिए भट्टे बढ़ाते जा रहे थे। इससे पर्यावरण जीव–जंतु, पेड़–पौधे प्रभावित होने लगें। धरती गर्म होती जा रही थी। असुरों को भट्टे बंद करने के लिए कहा गया पर वे मानते ही न थे। असुर हर वर्ष नर बलि दिया करते थे। एक बार नर बलि के लिए एक खसरा युवक मिला। लोक कथा बतलाती हैं कि खसरे युवक को अग्नि में डालने पर वह स्वर्ग बनकर भट्टे से जीवित निकल आया । फिर क्या था सोनापाने व बनने के लोभ में असुर आग में कूद गए। आग में कूदने चलने की प्रथम कथा यहीं मिलती हैं।

झारखण्ड नागभूमि रही हैं। मुण्डाओं ने यहाँ आने पर इस झारखण्ड का नाम नाग दिसुम (नाग देश) कहकर सम्बोधित किया। नागप्रिय महादेव की प्रिय भूमि झारखण्ड रहीं हैं। इसी से इस राज्य में झारखण्डी महादेव, बूढ़ा महादेव, बुधा महादेव, केतुंगा महादेव, पाट महादेव, टांगीनाथ महादेव सर्वत्र विराजमान हैं। महादेव मण्डा तो प्रायः देवीगुड़ी की तरह हर गाँव में अवस्थित हैं।

महादेव असुरों तथा नागों जैसे अनार्य समुदाय के आदि देव हैं, इन्हें खुश करने के लिए असुर सदैव तप करते रहे हैं, कठिन साधना करते रहें हैं। महादेव भी प्रसन्न होकर असुरों को वरदान देते रहें हैं। पौराणिक कथाएँ तो यही कहती हैं।

**बीज शब्द** : झारखण्ड, असुर, साराग, मुण्डा, लोहा, औजार, धरती, नर बली, मिथक, धर्म, पर्यावरण, जीव जन्तु, पेड पौधा, तकनीक, दिशा, इतिहास, पौराणिक, आदि काल।

**विवरण**

**मण्डा पर्व की परंपरा**– झारखण्ड का मण्डा पर्व इसी पर्व इसी महादेव महादेव की पुजा आराधना, तप व कठिन साधना से जुड़ा हुआ है जिसमें आराधक भक्त जिसे यहाँ भगतिया कहा जाता है 10–11 दिनों तक कठिन व्रत रखता हैं और आदिदेव महादेव को प्रसन्न कर अपनी मनोकामना पूर्ण करता है। मण्डा एक प्राचीन पर्व हैं और अभी तक इस पर शोध नहीं हो पाया हैं कि मण्डा पर्व का आरम्भ कब, कहाँ, कैसे, क्यों किसने किया।

फिर भी पारंपरिक रूप से इतिहास के अज्ञात काल से यह मण्डा पर्व सतत् अविराम चला आ रहा हैं। मण्डा पर्व को पूरे सदान, मुण्डा, उरांव, लोहरा व अन्य भी बड़ी श्रद्धा भक्ति, नियम–धर्म से मनाते एवं मानते आ रहे हैं। इससे विदित होता हैं कि मण्डा भी झारखण्ड का एक बड़ा पवित्र और कठिन पुजा हैं और लम्बे समय तक चलनेवाला उत्सव हैं। मण्डा झारखण्डी समरसता का एक बड़ा त्योहार हैं।

सर्वप्रथम इच्छुक व्यक्ति जो मण्डा पूजा में भाग लेना चाहता है वह पास के महादेव मण्डा के प्रधान पुजारी जिसे पाट भगता कहा जाता हैं, उसके पास जाता हैं और मण्डा का भगतिया बनने व प्रवेश करने की इच्छा जाहिर करता है। भगतिया 5 वर्ष से अधिकतम उम्र तक चल फिर संभाल सकने की अवस्था तक के पुरुष भाग लेते हैं। वह अपने झोले में एक लोटा, गमछा, साड़ी (धोती) आम के दतवन, आम के पत्तों समेत टहनी, चाँचर, धुंध, बैत की छड़ी, मोर पंख आदि पूजन सामग्री अवश्य रखता है। ऐसे भगतिया की सेवा के लिए उसकी पत्नी, बहन, बेटी, माँ, दादी, नानी कोई एक महिला तैयार रहती हैं। इसे सोखताइन कहते हैं, जो भगतिया के कठिन साधना के कष्ट को सोख लेती है। इसी से इसे सोखताइन कहा गया हैं।

**मण्डा पूजन विधि– महादेव मण्डा का प्रधान पाट भगता (प्रधान पुजारी)**

जब पूरी तरह इच्छुक को परख लेता है तब वैसे इच्छुक भगतियागण को नदी ले जाता हैं। वहाँ बिठाकर मण्डा पर्व के महत्व, उसके विधिविधान व निषेधों को विस्तार से बतलाता हैं। सभी एक दुसरे को तीन–तीन बार प्रणाम करते हैं, आम का दतवन करते हैं। स्नान करते हैं और वहीं नदी किनारे शांति से सादा भोजन, फल, चना आदि खाते हैं। कोलारस बिल्कुल मना हैं। छींक आने, हिचकी होने, खाँसी होने, सरकने, कंकड़ मिलने या किसी प्रकार की बाधा होने पर भोजन उसी समय रोक देते हैं। आगे शेष भोजन नहीं करतें। माँस, मछली, मदिरा का सेवन पूर्णतः वर्जित होता हैं। नदी किनारे की बालू में ही विश्राम करते हैं। संध्या समय महादेव मण्डा में माथा टेक कर घर लौटते हैं। सोखताइन उनकी हर विधि से ख्याल रखती हैं, सेवा करती हैं। दोनों ही जमीन पर शयन करते हैं। सोखताइन की प्रतिदिन के लिए गुलइंची फूलों का हार बनाती हैं। उसके लिए खाने की व्यवस्था करती हैं।

दूसरे दिन सभी भगतिया साड़ी पहनकर ऊपर सफेद, गंजी, गुलइंची फूलों की माला से तन के रहते हैं। कंधों पर दोनों ओर चाँवर बंधे होते हैं। पैरों में धरू बंधा होता है। पगड़ी के ऊपर मोर पंख कलगी की तरह खोसे रहते हैं। पाट अगता के साथ महादेव मण्डा में माथा टेक कर भगतिया के साथ स्नान ध्यान के उपरान्त गाँव–गाँव, घर–घर घुमकर बच्चों को सामने बैठाकर अपने पैरों से आशीष देते हैं। ध्यान देने की बात है कि पाट भगता श्वेत धोती पहने रहता हैं। उसके दाहिने बायें नगाइची अर्थात् नगाड़े बजानेवाले, ढॉकची अर्थात् बँक बजानेवाले तथा शहनाईवादक भी बजाते हुए चलते हैं। घर, आँगन, अखरा, चौराहे पर सभी भगतिया जुड़कर गाजे–बाजे के साथ नृत्य करते हैं। यह नृत्य बड़ा ही मनोहारी होता है। शहनाई वादक को प्रति घर से कुछ अनाज व पैसे मिलते हैं जो सभी भगतिया के काम आते हैं। यह प्रक्रिया 9 दिनों तक गाँव–घर, बदल–बदल कर होती हैं।

भगतिया सभी पाट भगता के साथ एक मंत्र हमेशा बोलते रहते हैं–''जय जगरनाथ'' काशी बैजनाथ, गया गजाधर, बेनी महादेव, बले शिवा मनि महेश इसके मूल शब्द इसी तरह सुनाई पड़ते हैं।

पाट भगता महादेव मण्डा शिवलिंग मंदिर से पाट को कंधे पर उठाकर आगे–आगे चलता है। उसके साथ नगाड़ा, ढॉक तथा शहनाई बजानेवाले बजाते हुए हैं। उनके पीछे सारे भगतिया मंत्र जाप करते चलते हैं और शिव मंदिर के अतिरिक्त अन्य किसी मंदिर या देवीगुड़ी तक जाते हैं और लौटते हैं।

नौवें दिन पूर्णतः उपवास एवं निर्जला रहकर सभी भगतिया एवं सोखताइन पूजा में सम्मिलित होते हैं। पाट भगता इनकी अगुवाई करता है। शौच तथा लघुशंका के बाद हर बार स्नान करना अनिवार्य होता हैं। सभी मिलकर दादुल घाट स्नान करने जाते हैं। गोलाकार बैठकर एक दुसरे को गुलईची फूल की माला पहनते व तीन–तीन बार प्रणाम करते हैं। इस दिन गुलंइची फूलों के साथ रजनीगंधा फूल की माला भी पहनाते हैं। महादेव मण्डा में जाकर सभी माथा टेकते हैं।

रात्रि में इधर महादेव मण्डा स्थल के खुले भाग में लकड़ी का देर लगाते हैं। उसे जलाकर अंगार बनाते हैं। सूप से हाँक कर सारी राख उड़ा देते हैं। दूसरी ओर एक झुलन में उल्टे सिर लटका कर ऊपर पैर फँसाकर भगतियागण को झुलाते हैं। नीचे गड्ढे में आग होती हैं। उस पर धुप–धुवन प्रज्वलित करते हैं और उसके ऊपर पहले पाट भगता फिर अन्य भगतिया को बारी–बारी से झुलाते हैं। कोई अगर चुपके से खाना खा लिया हैं या नियम भंग कर लिया धुम्रपान किया। तो उस झूलन के समय जिसे धुँवासी कहते हैं। अर्थात धूम्रपान किया तो उसकी उल्टी हो जाती हैं। भगतिया ने जो छुपकर सेवन किया हैं वह पूरी तरह बाहर निकल जाता हैं

जो उसके अनुशासन भंग की की प्रत्यक्ष प्रमाण होता हैं, सुख्ताइन आम की टहनी के पतों समेत लौटा मे जल लेकर सिर पर मेकर गोलाकार खड़ी रहती है वासी होने के बाद फूलखुंदी होती हैं।

मध्यरात्रि पाट भगता भगतिया लोगों के साथ एक घड़े को कंधे पर ढोकर बिना पीछे मुड़कर देखते हुए चुपचाप दादुल घाट तालाब या नदी चला जाता हैं। वहाँ से कमर से ऊपर तक पानी में प्रवेश कर एक ही साँस में डुबकी लगाकर स्नान और घड़ा भरने का काम करता हैं। बजानेवाले साथ बजाते हुए रहते हैं। सभी लौटते हैं। 10 से 15 फीट लम्बे आग के ढेर पर सर्वप्रथम पाट भगता अपनी अंजुली में आग उठाए महादेव मण्डा में शिवलिंग पर चढ़ाता हैं और उस पर धुप धुवन देता हैं। पूजा करने के बाद लम्बी अग्नि देर के चारों और भीगे हुए पुआल बिछा दिया जाता है। सभी भगतिया पुआल पर गोलाकार खड़े हो जाते हैं। सोख्ताइनों का वृत इनके बाहर–बाहर बना रहता हैं। वे भगतिया जनों पर आम की पतियों की टहनी से जल का छिड़काव करती रहती हैं भगतिया परिक्रमा करते रहते हैं। सभी विधियों को निपटाते हुए मध्यरात्रि के समय यह विधि सम्पन्न कराते हैं। सर्वप्रथम पाट भगता हाथ जोड़े महाकाल, भोले शिव को स्मरण करते हुए अग्नि में प्रवेश करता हैं और पूरी लम्बाई में इस तरह चलता है जैसे वह फूलों के सेज पर चल रहा हो। इसी से इसे फूलखुंदी कहते हैं। पाट भगता के बाद सारे भगतिया बारी–बारी से फलखुंदी करते हैं जिसमे महिलाएँ भी अपनी आस्था प्रदर्शन में पीछे नहीं रहती हैं वे भी दहकती अंगारों में निभर्य हो कर चलती हैं पूरे विधान की सच्चाई यह हैं कि मन से किया गया अराधना और उपसाना में कितनी शक्ति हैं। भगतिया लोगों की संख्या कहीं–कहीं 100–200 तक हो जाती है। तत्पश्चात जागरण का कार्यक्रम चलता हैं। इसे जागरण की रात भी कहते है। लोगों को जागृत रखने के लिए मण्डा स्थल पर ही फूलखुंदी के पूर्व एवं बाद भी छव नृत्य का या सांस्कृतिक गीत–संगीत का कार्यक्रम चलता रहता हैं। फुलखुंदी की समाप्ति के भगतियागण महादेव मण्डा परिसर में ही विश्राम करते हैं। सुबह घर जातें हैं।

दसवें दिन चरक डांग (चरखी झूलन) झूलने का तथा मेले का दिन होता हैं। पाट भगता कांटी के सेज पर सोकर महादेव मण्डा से झूलन स्थल तक आता हैं इसे बैलगाड़ी या सगड़ में रखकर लाया जाता हैं। इस समय पाट भगता लोगों की भीड़ पर गुलइची फूलों बौछार की जाती हैं। इसे शुभ और पवित्र प्रसाद समझकर लोग लोक लेते हैं और साल भर अपने घरों में सुरक्षित रखते हैं। सभी भगतिया आकर्षक वेश–भूषा में रहते हैं। चलने पर धुधंरू की झमझम से वातारण मधुर हो जाता है।

**मण्डा झूलन** – सर्वप्रथम झूलन मंच पर पाट भगता झूलता हैं। 15–20 फीट ऊँचाई पर एक ओर भगता लोगों को छाती पर कपड़े से बांध दिया जाता हैं, दूसरी ओर रस्सी से उसे हवा में

परिक्रमा कराया जाता हैं उस समय वह कुलकुले लगाता तथा अपने झोले से गुलइची फूलों को भीड़ में लुटाता रहता हैं। इसे भी पवित्र मानकर घरों में साल भर रखा जाता है।

बारी–बारी से सभी भगतिया लोगों के झूलने के बाद उतरनेवाले भगतिया को उनके बलिष्ठ स्वजन कंधे पर बिठाकर घर ले जाते हैं। घर में खान–पान होता है।

कहीं–कहीं धुँवासी के समय तथा कहीं–कहीं झूलन के दिन बकरे की बलि दी जाती हैं जिसका प्रसाद स्वरूप एक एक दोना प्रत्येक घर को दिया जाता है।

ग्यारहवाँ दिन मण्डा छठी होता हैं। इसे गणेश की छटी भी कहा जाता हैं। नौ दस दिनों के कठिन व्रत के उपरान्त दसवें दिन सगे–संबंधी मेले में आए रहते हैं। उनका विशेष भोजन से सम्मान होता हैं ग्यारहवें दिन मण्डा छठी के उपरान्त मण्डा का त्योहार समाप्त हो जाता हैं।

**निष्कर्ष** :–छोटानागपुर में विशेषकर पूर्वी दक्षिणी भाग में यह एक बहुत बड़ा और उल्लास का त्योहार हैं। उतरी पश्चिमी भाग में यह नहीं यह कम के बराबर मनाया जाता हैं। झारखण्ड का यह अनोखा त्योहार हैं, जब अंगार फूल बन जाते हैं। लेकिन पूरे देश में विश्व के बहुत से देशों में कुछ जाति व धर्म में अग्नि में प्रवेश करने आग पर नृत्य करने जैसे उत्सव होते हैं। यह श्रद्धा, विश्वास, भक्ति और अटूट सांस्कृतिक विरासत का त्योहार फूलबुंदी, अक्षय तृतीय से लगभग जेठ पूणिर्मा तक चलता रहता हैं। मण्डा का यह उत्सव एक दिन एक समय में न होकर रिले की तरह आज यहाँ कल वहाँ सिल सिलेवार चारों ओर घुमता रहता हैं। लोगों को इससे एक दुसरे के यहाँ आने–जाने में सुविधा होती हैं। जैसे सरहुल का उत्सव महीना भर चलता रहता है वैसे ही यह मण्डा का त्योहार पूरे झारखण्डी मूल के लोगों का अप्रतिम त्योहार हैं जो इनकी समरसता का धोतक हैं।

**संदर्भ ग्रन्थ** :–

1) झारखण्ड की जनजातियाँ – डॉ0 विमला चरण शर्मा
2) झारखण्ड के पर्व त्योहार – संजय कृष्ण
3) डहर महली – संपादक – डॉ0 राम प्रसाद
4) धर्म, समाज और संस्कृति – कृष्ण मोहन श्रीमाली
5) नागपुरी कला संगम स्मारिका – डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू
6) चुटियावासियों से साक्षात्कार
7) स्थानीय दैनिक पत्र रांची एक्सप्रेस प्रभात खबर, दैनिक